Date ....
Page ....

11 मैक्स-वेबर का सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धान्त (Theory of social stratification of Max Weber):-

मैक्स वेबर ने मार्क्स की तरह ही इस तथ्य को स्वीकार किया है कि आर्थिक आधार सामाजिक स्तरीकरण का एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्धारक है परन्तु इन्होंने सामाजिक स्तरीकरण के कारण के रूप में आर्थिक प्रक्रिया के प्रभाव को कुछ भिन्न रूप से प्रस्तुत किया है। वेबर का कथन है कि मनुष्य केवल आजीविका प्राप्त करने के लिए ही काम नहीं करता बल्कि कुछ दूसरे भी ऐसे कारण है जो उसके कार्यों को प्रभावित करते है। इसलिए सामाजिक असमानता अथवा सामाजिक स्तरीकरण की दशा को अनेक कारणों के सन्दर्भ में ही समझा जा सकता है। इसका अर्थ यह है कि सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था समाज में इसलिए उत्पन्न होती है कि कुछ व्यक्तियों के राजनीतिक, आर्थिक और वैचारिक अधिकारों का अपहरण कर लिया जाता है। इससे पुनः स्पष्ट होता है कि सामाजिक असमानता की स्थिति व्यक्ति को उपरोक्त जीवन में मिलने वाले विभिन्न अवसरों (Life Chances) से सम्बन्धित है।

वेबर के अनुसार व्यक्ति को जीवन में मिलने वाले अवसर दो दशाओं से सम्बन्धित है।
(क) व्यक्ति की आर्थिक स्थिति तथा (ख) व्यक्ति की सामाजिक स्थिति। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति इस बात पर निर्भर है कि आर्थिक इकाइयों पर उसके प्रभाव की मात्रा कितनी है, जबकि सामाजिक स्थिति इस बात पर निर्भर है कि उसके रहन-सहन, शिक्षा, वंश और आर्थिक स्थिति के कारण उसे समाज में कितना सम्मान मिलता है।
वेबर का विचार है कि यदि एक अथवा कुछ व्यक्तियों को समाज में सम्मानपूर्ण स्थिति प्राप्त हो जाती है तो उन्हें भविष्य में भी लाभ के अवसर प्राप्त होते रहते हैं। दूसरे शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि यह विशेष अधिकार सम्पन्न व्यक्ति अनेक प्रकार से आर्थिक और सामाजिक शक्तियों को अपना एकाधिकार स्थापित करके प्रगति के अवसरों को बढ़ाते रहते हैं और इस प्रकार अपनी उच्च स्थिति को स्थायी बनाने की कोशिश करते हैं। उदाहरण स्वरूप - जब कोई व्यक्ति कुलीन वर्ग या राजा-महाराजा के

खानदान में पैदा होता है तो समाज उसे जन्म के आधार पर ही उच्च सामाजिक स्तर आरोपित करता है। और इंग्लैण्ड, जापान, नेपाल सऊदी अरब, थाईलैण्ड में आज भी देखने को मिलता है कि वहाँ कुछ लोगों को जन्म से ही सामाजिक हैसियत प्राप्त है। सामाजिक स्तरीकरण में वे सबसे ऊँचे स्तर पर खड़े होते हैं। दूसरी तरफ कुछ ऐसे भी लोग हैं जो जन्मजात नीचे सामाजिक स्तर वाले होते हैं जिसे भारत में दलित या अछूत वर्ग विभाजन (Group) कहा जाता है इससे यहाँ पर यह स्पष्ट होता है कि समाज किसी व्यक्ति के समूह को कितना सम्मान की दृष्टि से देखता है, इस तथ्य पर भी सामाजिक स्तरीकरण निर्धारित होता है।

इसके अतिरिक्त वेबर ने यह ~~कि~~ विचार भी प्रस्तुत किया कि सामाजिक असमानता केवल तब उत्पन्न होती है जब समाज में कुछ व्यक्तियों को भौतिक और अभौतिक दोनों प्रकार ~~के कुछ व्यक्तियों को~~ ~~भौतिक~~ के लाभ प्राप्त होने लगते हैं। जबकि कुछ व्यक्ति इन लाभों को उतनी अधिक मात्रा में प्राप्त नहीं कर पाते अथवा उनसे

बिलकुल वंचित रह जाते हैं। इसी के फलस्वरूप सामाजिक असमानता अथवा सामाजिक स्तरीकरण का जन्म होता है। वेबर ने यह भी बताया है कि जब कभी भी सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था में कोई परिवर्तन होता है तो इसका कारण सदैव आर्थिक नहीं होता बल्कि प्रमुख रूप से मनोवैज्ञानिक होता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि जब उत्पादन के तरीके आविष्कार अथवा कार्य करने के ढंग बदल जाते हैं तो उन लोगों को समाज में वही सम्मान नहीं रह जाता जो उन्हें परम्परागत रूप से मिलता रहा है। इसके फलस्वरूप सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन होने लगता है।

DR. VIJANT KUMAR MISHRA
Assistant Professor
Guest faculty/Part Time
Dept of Sociology
vijantmishra1@gmail.com
Mobi - 9308451461 / 7903930105

Date - 18/01/22